

DPN 6503

सुराज्यावलोकितेश्वर स्तोत्र व ज्योतिष

Title: SURĀJYĀVALOKITŚWARA STOTRA WA JYOTIṢA

Run. No. 7228

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र व ज्योतिष Hymn and Astronomy.
Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 16.2 x 6.8

Folios 21

Lines (in a page) 5

Compl. / ☒ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / ☒ thyaśaphu /

Condition : fine / ☒ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

A इति भगवते स्मरं देव्य (T) नां जन्यु मत्सतेनेद जगद्धारपटां, श्री प्रोतकाचन वाशन
P.T.O.

जनयंतु शुद्धं विविधे विरासनं ॥ इति सुराज्यावलोकितेश्वर मन्त्रारकस्य
चरपाते पा(६) विरचितं त्रोटं समाप्तः ॥ * ॥

ज्योतिष

ॐ नमः अश्विने नक्षत्राय ॥ सप्तवाहन ॥ देवजाति ॥

5



H13 M2

0

cm's

5

10

15

10
ननुमादिगमाय ननुमादिगमाय ननुमादिगमाय
सयार्थः स्तुत्यनाथकनामविचार्य ॥ ७ ॥ देवमनु
षास्तुजगद्गेषुः निश्चैकतलकैयुगकृताशा सत्यावन्ति
द्वसंति सदागोः प्रहसिगवनिगितवमरिवागो ॥ १ ॥

ननुमभायत्रिस्तुजकाप्रथः विद्वत्सवीर्तगाकाप्रथः ४
ल्लं निष्ठानुरुगावतरममिमनामिः स्यात्तलकैनेयवि
स्योमिश ॥ ७ ॥ किंशायुगकलोमकवायः मय
सिरुगावतमामकिगार्थः प्रथवायुगकपागवपृथः जत
यसिदृक्कथमवियुध्य ॥ २ ॥ सुमर्तननामिश्वा

वसिष्ठलिङ्गः कथयसीकपूर्वकिमगिमहृष्टशान्ता
 यैरुगवनपत्रादिदत्तः कथमाकुरुमाहिंसितवत्तः
 ॥ १० ॥ दक्षिणुर्वज्रनयस्ककार्यः गार्ज्जमण्यवीस
 वीचिकशा मंसानिसिवाशुख्येयैर्जनैः समस्तानिस्था
 दनुमदन्तः ॥ ११ ॥ अजुनशुनिकोंकायाइकसिद्धिः

सिद्धोषदिमक्षिमनुविद्युद्धिः सिद्धि उग्रस्य म्नीवप्रवर्गम
 मुष्यशुजस्यल्लोकमंशा ॥ १२ ॥ यकवचलनवि
 वाचनहीनाः विविधियाधिमहारुयहीनाः गेट्टुक्का
 यस्कसगीनाः यिवसंगनकागुर्गलीया ॥ १३ ॥
 गनुउवाधिगददाकिन्यः सान्निध्यागिसदायागीणी ॥

सलमिमगस्यथादिमडाग १ पील्वंजस्यस्वजिनरुगाभा १४ ॥
 वृत्तिलोककथावकिपीयमानम्वसिरुगवनमामकिता
 र्थशात्रीमिहमनुदिकृपाक्षिः नासयगा ४४ माकृ लकाक्षि
 ॥ १८ ॥ षड्विषयदियत्रकलमनसाः कृगवकृपा
 पंथाकृलयपृषाः नील्वंजमजमयास्मिनसकर्व १३

✱ ✱ ✱

०४ मिनिमिहकुरुमगाविषर्त्री ॥ १८ ॥ मनुर्मुस्युति
 ममवाकं ४४ः पुनगाविविधजनितामिद्याजं नाउ लपा
 यकइ ४४ र्वरुगार्तिरुमगायास्मिनमाय ॥ १९ ॥ भा
 हादेषयिनासनहृदः स्वसीसायदाहादधिर्वं सदी १५
 पुनिगागगीथापनवाहः स्वगुर्इतिदनिसागत्रवाह १

॥ १६ ॥ दंष्ट्रीगं सुगगानुगयगताः त्वंयादिगवक्रुइ
 शशिगसता ॥ निर्झिगइजयमन्मथमायाः त्वंसागि
 नववानसपाल ॥ १७ ॥ सकयजद्यातविर्किचनद
 रुः त्वंययमकिदजगगसूदरु ॥ रुगवनइनूययक
 वृतासिंधूः त्वजनविविधिकावृक्षवंधू ॥ २० ॥

विषयसविर्दुगतरुमत ॥ २१ ॥ सकयजताथपुयाकतूना
 लीलाविदलिगकसरिग्नीः त्वंयादिगविषयव्यासंधा
 ॥ २२ ॥ ययमयवृवंनपिकवृतावाः महियत्रि
 नायनकथातिरवात ॥ कथमियाभादमहात्रदद
 स्थः सायंरुमतानिप्रसूतनाः यतनत्रकसिखि

॥ १ ॥
 रवा
 यव
 ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥

10

5

विषवन्तः॥ ३३ ॥ ताथ कया प्रथम विमात्राः सत्यं
पूजता वृजधनकात्राः ॥ ३४ ॥ निममनतवद्ददः सज
निमिप्रजतमनिसमस्यष ॥ २४ ॥ ॐ निरुगततस्म
रंदतानाः जन्मममनतदः जगद्गुनत्रयर्षः योशा
नकाचनवागतः जनयिषुशुलविषिविषिनासनी

✱ ✱ ✱

ॐ निस्त्रिमात्रावला कितम्बत्र हकात्रकस्यः चत्रपति
पावित्रचिरुगुर्न समाफ ॥ ३५ ॥ ॐ निस्त्रिमात्रावला
कितम्बत्र हकात्रकस्यः चत्रपति

॥ ३६ ॥

ॐ नमः॥ प्रलवानवमि प्रवसवका ॐ नि॥ इत्य
 दममिउग्रनमाह शुलि॥ गो काणि आङ्कन
 रुमानि॥ यं गुपि द्वादशिन ६० ना नायनि॥ य
 मिउदसद विं नवाताहि॥ षष्ठमिव तु दस्यी वरु मस
 ॐ द्वायानि॥ षष्ठमिव नमाव ॥ स्या वाक् वेदा म्मादा॥

अथ मन्त्रमावस्यी ॐ सोम स ल मि

ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि
 ॐ सोम स ल मि

यव	न	न	न
वृक्षा ॐ	वृक्षा ॐ	वृक्षा ॐ	वृक्षा ॐ
उत्तव	उत्तव	उत्तव	उत्तव
नाह	नाह	नाह	नाह
साधन	साधन	साधन	साधन
यवा	यवा	यवा	यवा
य	य	य	य

10

5

ॐ नमः॥ अग्निं न कुरुया॥ सल वा हान॥ देवत्राणि॥
॥१॥ रश्मिं न कुरुया॥ यज्ञं वा हान॥ मानुक्रत्रा
णि॥२॥ कलिकं न कुरुया॥ अग्निं कुरु वा हान॥
त्रा कुरुया॥३॥ नाहिं न कुरुया॥ रुद्रिहा वा
हान॥ मानुक्रत्राणि॥४॥ मृगसिं न कुरुया॥

॥ यज्ञं वा हान॥ देवत्राणि॥५॥ अज्ञानं कुरुया॥ वि
वा हान॥ मानुक्रत्राणि॥६॥ यज्ञं वंशु न कुरुया॥
॥ यज्ञं वा हान॥ देवत्राणि॥७॥ अश्वं न कुरुया॥ य
ज्ञं कुरु स वा हान॥ देवत्राणि॥८॥ अश्वं
य न कुरुया॥ कायं वा हान॥ त्रा कुरुया॥९॥

मन्त्रनक्रुपया॥ मन्त्रवाहन॥ नाक्रुस्रुति॥ १०॥ पु
र्वराजुननक्रुपया॥ जिनावाहन॥ मानक्रुस्रुति॥ ११॥
उग्रराजुननक्रुपया॥ जिनावाहन॥ मानक्रुस्रुति॥ १२॥
हस्तनक्रुपया॥ किजिवाहन॥ देवस्रुति॥ १३॥
अग्रनक्रुपया॥ कोसवाहन॥ नाक्रुस्रुति॥ १४॥

स्वातिनक्रुपया॥ इतिवाहन॥ देवस्रुति॥ १५॥
विष्णुवनक्रुपया॥ रुस्रुवाहन॥ नाक्रुस्रुति॥ १६॥
अनूनारुनक्रुपया॥ हंसवाहन॥ देवस्रुति॥ १७॥
अश्वनक्रुपया॥ कायप्रवाहन॥ नाक्रुस्रुति॥ १८॥
मन्त्रनक्रुपया॥ देववाहन॥ नाक्रुस्रुति॥ १९॥

10
य द्वा वि ध न कृ प्र या ॥ वार्ष णि वा हा न ॥ मानू क
आ ति ॥ २० ॥ उ ग्रा षा रु न कृ प्र या ॥ वार्ष णि वा हा
न ॥ मानू क आ ति ॥ २१ ॥ शु व लू न कृ प्र या ॥ न न
वा हा न ॥ ५ व आ ति ॥ २२ ॥ ५ न कृ प्र या ॥
वा ल वा हा त ॥ ना क ग आ ति ॥ २३ ॥ सु ग रि

५
ष न कृ प्र या ॥ धृ षा वा हा न ॥ ना क स आ ति ॥ २४ ॥
॥ य व र उ न कृ प्र या ॥ को य णि वा हा न ॥ मानू क
आ ति ॥ २५ ॥ उ ग र उ न कृ प्र या ॥ को य णि वा हा
न ॥ मानू क आ ति ॥ २६ ॥ ५ व णि न कृ प्र या ॥ य क
वा हा न ॥ ५ व आ ति ॥ २७ ॥ धृ णि न कृ प्र स मा य

१ नमो ॥ अं शि नि च १० र नि च १० कृत्ति का या द
म व य ॥ १७ अ न दं ग म न कं कृत् ॥ म व ना गि वि
वि य ॥ १॥ कृत्ति का ली गु य या दं मं ७ ना हि नि
१० म ग गि ना रु या ३० शु क कृत्ति मि दं कृ यं ॥
वृ ष ना गि वृ द्वि य ॥ २॥ म ग गि ना ध ३० स मा

डा १० अ य या द वृ ल् व गु ७७ वृ द्व कृत्ति मि दं
कृ १॥ मे धू न ना गि वि वि य ॥ ३॥ पु न र्व गु या
द म क लु १७ अ कृ १० अ न न वा म व य ॥ य कृ कृ
ग मि दं कृ य ॥ क कृ ना गि वि वि य ॥ ७॥ म या य १०
व र्व य ॥ गु न्ना १० उ ग्रा या द म व य १७ शु र्व कृत्ति मि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री कृष्ण विष्णु यत् ॥ १॥ उग्र नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दे ॥ २॥ हस्त ॥ ३० विष्णु धर्म वचन ३० ब्रह्म कृष्ण मिदं ब्रह्म
यै ॥ कर्ण नाभि विष्णु यत् ॥ ४॥ विष्णु धर्म ३० स्वाति सं
पु ॥ ५० विष्णु धर्म वाच वा दत्त यै ६० शुक्र कृष्ण मिदं
ब्रह्म यै ॥ पुत्र नाभि विष्णु यत् ॥ ७॥ विष्णु धर्म वाच

10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

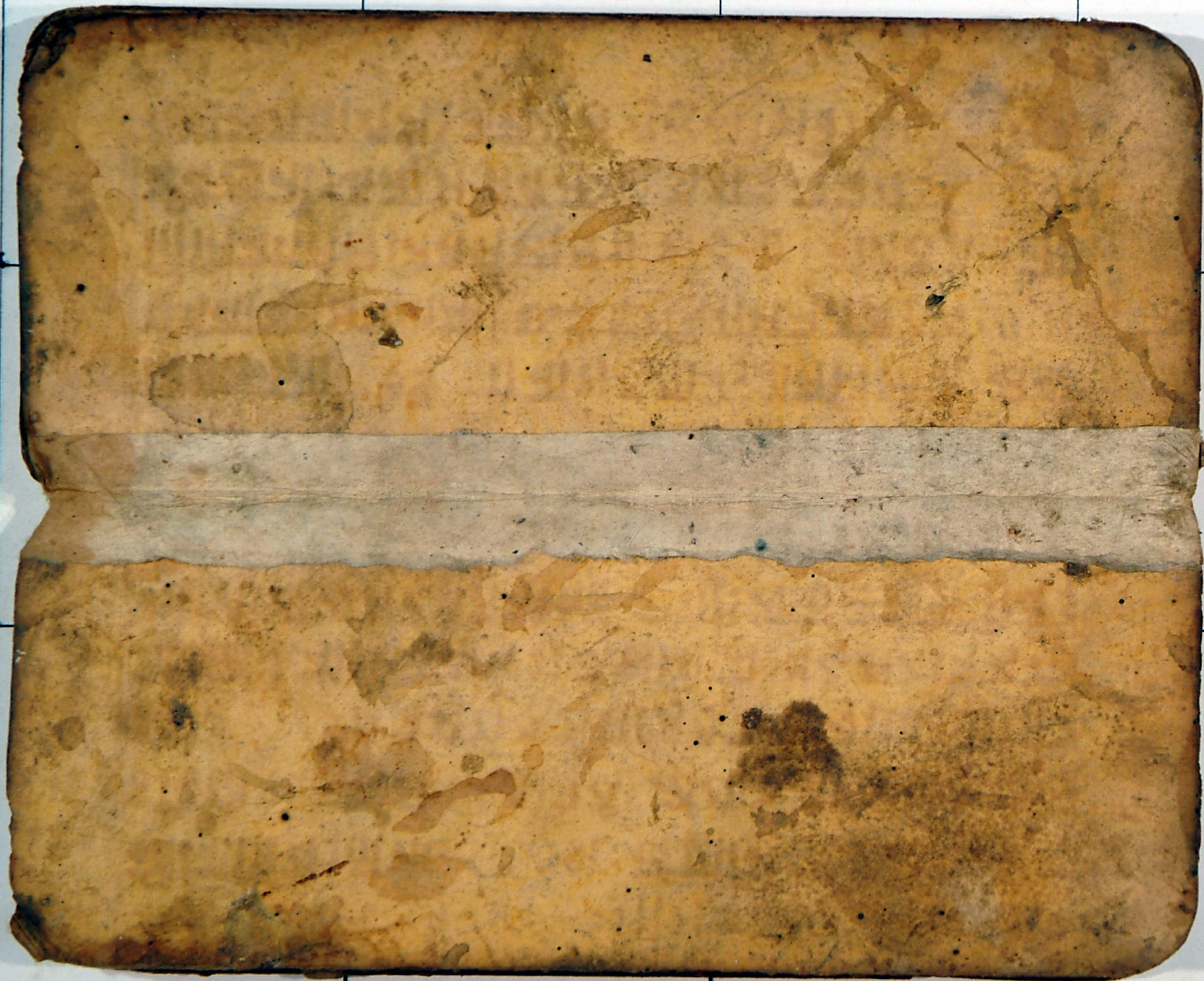
0

cm.

5

10

15



10

5

0

cm.

5

10

15



10

5

0

cmts.

5

10

15

10

5

0

cm.

5

10

15